Roll No...[redacted]

B.A. (Pt. II)

2102-I-A

0019374

Hindi Lit. I

B.A. (PART-II) EXAMINATION - 2018

(For Non Collegiate)

(10+2+3 Pattern)

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part II Three- Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न–पत्र

(रीतिकाल)

Time allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित है।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) कालिंदी की धार निरधार है अधर, गन
अलि के धरत जा निकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे हैं सिखंडि , घन,
इंद्रनील कीरति कराई नाहिं ए सहैं।
एड़िन लगत सेना हिय के हरष – कर,
देखत हरत रतिकान्त के कलेस हैं।
चीकने, सघन, अंधियारे तैं अधिक कारे,
लसत लछारे, सटकारे, तेरे केस हैं।।

अथवा

पाइ महावरू दैंन को नाइनि बैठी आइ।
फिरि फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ।।
मंगल बिन्दु, सुरंगु, मुखु ससि केसरि आड़ गुरू।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन जगत।।
अंग – अंग नग जगमगैं, दीपशिखा – सी देह।
दिया बढ़ाएँ हूँ रहै, बड़ो उजेरौ गेह।।

(ख) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी।
निघटी रूचि मीचू घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी।
अघ–ओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूज्ञान गटी।
चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धुरजटी वन पंचवटी।।

अथवा

राधिका कान्ह को ध्यान करै, तब कान्ह है, राधिका के गुन गावैं।
त्यौं अँसुवा बरसैं बरसाने को, पाती लिखि, लिखि राधे को ध्यावै।
राधे ह्वै जाय धरीक में 'देव' सुप्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपुने आपुही में उरझे, सुरझे विरूझे समुझे समुझावै।।

(ग) साजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धरि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के नदी नद मद गैबरन के रलत है।
ऐल – फैल खैल–भैल खलक में गैल गैल गजन की ठैल पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि – धारा में लगत जिमि धारा पर पारा पारावार यों हलत है।

अथवा

भोर, तैं साँझ लौं कानन–ओर निहरति बाबरी नैक न हारति।
साँझ तै भोर लौं तारिन ताकिबौ तारिन सों इकतार न टारति।।
जौं कहूँ भावतो दीठि परै घनआनंद आँसुनि औसर गारति।
मोहन–सोहन जोहिन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति।।

(घ) ऐसी न देखी सुनी सुजनी धनी बाढ़त जात बियोग की बाधा।
त्यों 'पद्माकर' मोहन को तब तें कल है न कहूँ पल आधा।।
लाल गुलाल घलाघल में दृग ठोकर दै गयी रूप अगाधा।
कै गयी कै चेटक – सी मन लै गयी लै गयी ले गयी राधा।।

अथवा

नीके न्हाइ धोइ धूरि पैठो नेकु बैठो आनि, धूरि जटि गई धूरिजटी लौं भवन में।
पैन्हि पैठो अम्बर सु निकस्यो दिगम्बर ह्वै, दृग देखो भाल में अचम्भौ लाग्यौ मन में।
जैसो हिमकर धरे और गरे गरल, भारी धरु डरु वरु छाड्यो एक खन में।
देखे दुति ना परत पाप रेते पा परत, सापरे ते सुरसरि साँप रेंगे तन में।।

2. रीतिकाव्य परम्परा में केशव का आचार्यत्व सिद्ध कीजिए।

अथवा

धनानन्द की काव्य – सौन्दर्यगत विशेषताओं को सोदाहरण विवेचना कीजिए।

3. "पद्माकर की कविता में रीति – काव्य की सभी विशेषताओं का समाहार हो जाता है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

बिहारी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. रीतिकालीन कवियों में महाकवि देव का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

"रीतिकालीन श्रंगारिकता में भूषण ही एकमात्र वीर रूस के श्रेष्ठ कवि थे" इस कथन की तर्कसम्मत विवेचना कीजिए।

5. 'सेनापति ऋतुवर्णन करने में अग्रणी कवि थे।' उनके ऋतु – वर्णन की विशेषताएं बताते हुए स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"आलम स्वच्छन्दतावादी कवि थे।" कथन के आधार पर आलम के काव्य में वर्णित प्रेम व्यंजना को स्पष्ट कीजिए।